AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

न्याय प्रक्रिया में होने वाली देरी भी एक बड़ी चुनौती

लखनऊ। निर्भया केस की वकील रहीं सीमा समृद्धि ने कहा है कि भारत के कानून ही नहीं भारतीय धर्मशास्त्र में भी बलात्कारी को जल्द मृत्युदंड देने का विधान है। वह लखनऊ विश्वविद्यालय में मिशन शक्ति के तहत संस्कृत व प्राकृत भाषा विभाग की ओर से आयोजित वेबिनार को संबोधित कर रही थीं।

निर्भया केस की वकील ने कहा- नहीं हो पा रहा कानून का पालन

सीमा समृद्धि।

उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय और विधायिका ने इस विषय में कड़े निर्णय, नियम और कानून बनाकर महिलाओं को संरक्षण उपलब्ध कराया है, लेकिन उनका अनुपालन नहीं हो रहा है। न्याय प्रक्रिया में होने वाली देरी भी एक बड़ी चुनौती है। निर्भया के केस में भी उच्चतम न्यायालय में केस लिस्ट आने में ही एक साल लग गया था।

संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग के अध्यक्ष पद्मश्री प्रो. बृजेश शुक्ल ने बताया कि स्त्री की अनुमति के विपरीत उसे देखने, बात करने, और उसके आस पास जाना भी शास्त्रों की दृष्टि मे अपराध है। इस मौके पर प्रो. शीला मिश्रा, डॉ. भुवनेश्वरी व डॉ. ऋचा भी मौजूद थी।

एलयू रेड की आसान जीत

लखनऊ। एलयू रेड और ऑरेंज ने फाइव-ए-साइड वैष्णवी फुटबॉल टूर्नामेंट में पूरे अंक प्राप्त किए। लखनऊ विश्वविद्यालय क्रीड़ा प्रांगण में प्रतियोगिता के पहले मुकाबले एलयू रेड ने एलयू ब्ल्यू को 6-1 से करारी मात दी। विजेता टीम की ओर से आशू ने सर्वाधिक तीन और तारिक, विवान और हर्ष ने एक-एक गोल किए। पराजित टीम से एकमात्र गोल अमित सिंह के नाम रहा। दूसरे मुकाबले में एलयू आरेंज और एलयू ग्रीन के बीच मुकाबला 1-1 से बराबर रहा। मैच के दौरान आरेंज से प्रभात सिंह और ग्रीन से निखिल ने एक-एक गोल किए।

एलयू में नए सत्र से नया कोर्स

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में नए शैक्षिक सत्र से एमबीए जैसा प्रोफेशनल पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। एम.कॉम इन फाइनेंस एंड एकाउंटिंग की शुरुआत की जा रही है। इसमें डिजिटल और फारेंसिक एकाउंटिंग सिखाई जाएगी। बीकाम, बीटेक, बीएससी मैथ्स वाले छात्र-छात्राएं प्रवेश ले सकेंगे। दो शिफ्ट में ट्रेनिंग दी जाएगी। कोर्स चाइस बेस क्रेडिट सिस्टम के तहत संचालित होगा।

HINDUSTAN PAGE 8

एलयू में बनेगा पहला शैव दर्शन संस्थान

पहल

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रदेश का पहला शैव दर्शन संस्थान बनेगा। नए शैक्षिक सत्र में इसकी शुरुआत की जा रही है। यहां शैव दर्शन पर शोध के साथ पीजी पाठ्यक्रम की शुरुआत की जाएगी। यह प्रदेश का पहला ऐसा संस्थान है जहां शैव दर्शन पर प्रमुखता से काम किया जाएगा।

पदमश्री प्रो. बीके शुक्ला ने बताया कि ये अभिनव गुप्त संस्थान 5 अगस्त 1968 में स्थापित हुआ। इसकी स्थापना उस समय के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष व प्रोफेसर डॉ.कांतिचंद्र पांडेय ने की थी। जिसका शिलान्यास 21 दिसंबर 1968 में मौजूदा कुलपति डॉ. मुकुन्द बिहारी लाल ने किया था।

प्रो. शुक्ला ने जानकारी दी कि इस संस्थान की स्थापना के लिए डॉ.कांतिचंद्र पांडेय ने कुछ अपनी पैसा जेब से लगाया और कुछ पैसा उनको यूजीसी से ग्रांट में मिला था।

जानकारी के अनुसार स्थापना के दौरान इस संस्थान में केवल एक हॉल और एक क्लास रूम और डॉ.कांतिचंद्र पांडेय का एक कमरा हुआ करता था। जिसमें अभिनव गुप्त के सौंदर्य और दर्शन शास्त्र पर शोधार्थी शोध किया करते थे।

अब स्कूल के रूप में होगा स्थापित

अगले सत्र से अभिनव गुप्त संस्थान को अभिनव गुप्त सौंदर्यशास्त्र शैव दर्शन संस्थान के रूप में विकसित किया जा रहा है। पहले यह कला संकाय के अधीन संचालित होता था। लेकिन अब यह एक स्कूल के रूप में संचालित किया जाएगा। इसका भवन एलयू ओल्ड कैंपस स्थित न्यू कॉमर्स ब्लॉक के पीछे बनाया गया है। अभी इसका निर्माण कार्य जारी है। बता दें अभी तक इस संस्थान में अभिनव गुप्त के सौन्दर्य कला एवं शैव दर्शन पर केवल शोध होते आए हैं। इसमें देश विदेश से शोधार्थी शोध करने के लिए आते थे। हालांकि अगामी सत्र 2021-22 से इसमें इन्हीं विषयों में एम संचालित करने की भी योजना बनाई जा रही है। सिलेबस लगभग बनकर तैयार हो चुका है।

JAGRAN CITY PAGE III

अब डिजिटल और फारेंसिक अकाउंटिंग भी पढ़ेंगे छात्र

जासं, लखनऊ : लविवि का कामर्स विभाग नए सत्र से एमकाम में दो वर्षीय एमबीए फाइनेंस एंड अकाउंट्स की शुरुआत करेगा। यह पूरी तरह से प्रोफेशनल कोर्स होगा। इंडस्ट्री की मांग के अनुसार इसका पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इसमें छात्रों को डिजिटल और फारेंसिक अकाउंटिंग भी पढ़ाई जाएगी। साथ ही प्रैक्टिकल होंगे। कुलपति ने इसे चलाने की सैद्धांतिक सहमति दे दी है।

दरअसल, सेंटर आफ एक्सीलेंस और भाऊराव देवरस शोध पीठ मिलने के बाद कामर्स विभाग छात्रों को नई सुविधाएं देने की तैयारी में जुटा है। यही वजह है कि छात्रों को रोजगार परक बनाने के लिए नया कोर्स तैयार किया है। विभाग के हेड प्रो. अवधेश कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय में एमबीए का जो कोर्स चल रहा है, इंडस्ट्री की पूर्व मांग के अनुसार है। अब पीजी प्रोफेशनल कोर्स वर्तमान मांग को देखते हुए बनाया गया है। इसमें बीकाम, बीटेक, बीएससी मैथ्स वाले छात्र-छात्राएं प्रवेश ले सकेंगे। उन्होंने बताया कि यह कोर्स भी च्वाइस बेस क्रेडिट सिस्टम के तहत संचालित होगा।

बनेंगी दो कंप्यूटर लैब, बढ़ेंगे क्लास रूम: कामर्स विभाग में जल्द ही दो कंप्यूटर लैब बनाईं जाएंगी। छात्रों को टैली भी सिखाई जाएगी। विभाग के हेड ने बताया कि उप मुख्यमंत्री डा. दिनेश शर्मा ने विभाग में नई सुविधाओं के लिए चार करोड़ रुपये देने की मंजूरी दी है।

VOICE OF LUCKNOW PAGE 5

लविवि मांग वाले कोर्स की बढ़ायेगा सीटें

बीकॉम व एलएलबी की पूर्व में बढ़ चुकी सीटें, अन्य कोर्सों के लिए चल रही समीक्षा

शैलेन्द्र श्रीवास्तव (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय अपनी आर्थिक स्थिति दुरूस्त करने के लिए अपनी आमदनी बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसके लिए विश्वविद्यालय प्रशासन अब अपने अधिक मांग वाले कोर्सों की सीटें बढ़ाने की तैयारी में है ताकि अधिक सीटों पर प्रवेश होने से आमदनी में बढ़ोत्तरी हो सके। विश्वविद्यालय प्रशासन छात्रहित में शुल्क वृद्धि नहीं करना चाहता है।

लविवि प्रशासन लगातार अपनी आर्थिक तंगी का हवाला देता रहा है लेकिन गत वर्ष पूर्व कुलपति आलोक कुमार राय के आने के बाद से विविके आलाकमान की ओर से बजट को लेकर रोना बंद हो गया है। वह अपनी संसाधनों के अनुसार ही अपनी आय को बढ़ाने के प्रयास में जुट गये है। विवि प्रशासन की ओर से अब छात्रहित में फीस न बढ़ाने का निर्णय लिया जा रहा है लेकिन विश्वविद्यालय की आर्थिक सेहत को बेहतर बनाने के लिए अपने मांग वाले कोर्स की सीटें बढ़ाने के प्रयास में जुट गया है। विवि प्रशासन की ओर से गत वर्ष भी बिना फीस बढ़ाये ही बीकाम और एलएलबी की सीटों में बढ़ोत्तरी कर दी है। इसी तर्ज अब विवि प्रशासन अन्य कोर्सों की समीक्षा कर सीटें बढ़ाने का मन बनाये हुए है। इस पर कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय भी कह चुके है कि कोर्सों की फीस बढ़ाने से बेहतर है सीटें बढ़ा दी जाये। इससे छात्रों को विवि में पढ़ाई का मौका मिलेगा और दूसरी तरफ इससे विवि को भी आर्थिक लाभ मिलेगा।

बीते सत्र हुए रिकार्ड आवेदन

लविवि में बीते सत्र में स्नातक में चार हजार से अधिक आवेदन आये थे। वहीं, परास्नातक में भी रिकार्ड आवेदन आये थे। कोरोना संक्रमण के चलते इस बार शहर के बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं को अभिभावकों को बाहर नहीं भेजा, जिसके चलते स्नातक और परास्नातक में बम्पर आवेदन आये थे। आवेदन की स्थिति

को देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन काफी उत्सुक है और उन्हें और भी उम्मीद है कि इस बार भी आवेदन की स्थिति बेहतर रहेगी। जिसकी तैयारी विवि प्रशासन पहले से ही शुरू कर दी है ताकि आवेदन प्रक्रिया शुरू करने से पहले ही सीटों की स्थिति स्पष्ट रहे।

इन कोर्सों में बढ़ सकती है सीटें

लविवि में बीकॉम व एलएलबी की सीटें बढ़ चुकी है। इसके अलावा बीएससी मैथ और बायो को लेकर भी मंथन रहा है। इसी प्रकार बीए में भी कई विषयों में सीटें बढ़ाई जा सकती है। इसी तरह परास्नातक स्तर की बात की जाये तो एमकॉम के कामर्स और एप्लाइड इकोनॉमिक्स के साथ ही एमएससी के बायोकैमेस्ट्री में 25 सीटें के लिए गत वर्ष 148 आवेदन आये थे। इसी प्रकार एमए व एमएससी स्टैटिक्स के लिए भी ठीक आवदेन आये थे। एमएससी बोटनी, प्लांट साइंस व माइक्रोबायोलाजी में 135 सीटें के लिए 758 आवेदन आये थे। वहीं एमएससी कैमेस्ट्री, फार्मास्युटिकल की 130 सीटों के लिए 656 आवेदन आये थे। वहीं, एमएससी फीजिक्स व रिनेवल एनर्जी 97 सीटों के लिए 467 आवेदन आये थे। इन विषयों में रेगुलर और सेल्फफाइनेंस दोनो की सीटें है। यदि सिर्फ सेल्फफाइनेंस की बात की जायें तो एमएससी के इंवायरमेंटल एनर्जी, फूड प्रोसेसिंग एंड फूड टेक्नोलॉजी, एप्लाइड जियोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर साइंस, फारेंसिक साइंस और एमएससी मैथमेटिक्स के रेगुलर कोर्स 150 सीटों को लिए 609 आवेदन आये थे और एमएससी जूलॉजी की 50 सीटों के लिए 572 आवेदन आये थे। यह सभी आकड़े बीते वर्ष के हैं, जिनसे आसानी से स्पष्ट हो जाता है कि यही ऐसे कोर्स जिसमें विश्वविद्यालय प्रशासन को सीटें बढ़ाने का लाभ जरूर मिलेगा।

लविवि में पढ़ाई करने का सपना बहुत से छात्रों का होता है। ऐसे में सभी प्रवेश तो नहीं मिल पाता लेकिन सीटों को बढ़ाने से कुछ और छात्र विवि में पढ़ाई का अवसर पायेंगे और इससे विवि आर्थिक स्थिति बेहतर बनाने के लिए आत्मनिर्भर की ओर कदम और आगे बढ़ेगा।

डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता, लविवि

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

लखनऊ वि.वि. द्वारा यौन उत्पीड़न जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के सचिव सपना त्रिपाठी, संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर सी. पी. सिंह और विधिक सहायता केंद्र के अध्यक्ष के डॉ अनुराग कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में यौन उत्पीडन (निवारण, प्रतिबंध और प्रतिशोध) अधिनियम 2013 पर सेंट मैरी इंटर कॉलेज जानकीपुरम में 21 जनवरी को एक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विधिक सहायता केंद्र के सदस्य देवांग, हर्ष, यशवर्धन, राहुल, सौरभ, नवदीप, कृतिका,संजली,नैना और सेंट मैरी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य (केविन यरनॉल्ड उकोस्ता) समेत शिक्षक व छात्र छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यशाला में इस बात पर जोर दिया गया कि कैसे महिलाओं के साथ जगह-जगह पर यौन उत्पीड़न किया जाता है और बहुत सी महिलाएं

इस बात पर ध्यान नहीं देती हैं। वे समझती हैं कि यदि इस बात को समाज के सामने लाया गया तो उनको समाज से हाशिए पर किया जा सकता है और उनको समाज में बहुत बेज्जती होगी। इसी बात को लेकर विधिक सहायता केंद्र के वक्ता देवांग ने बताया कि ये यौन उत्पीड़न को सहना सही नहीं है क्योंकि यह सहना अभिशाप है और इन यौन उत्पीडन से बचने के लिए सरकार ने कई नियम-कानून बनाई हुई है,जैसे - यौन उत्पीड़न (निवारण, प्रतिबंध, य प्रतिशोध)। अतः हमें इन नियमों का उपयोग करके यौन उत्पीड़न के खिलाफ कठोर से कठोर करवाई करनी चाहिए। इसी दौरान विद्यालय के छात्र उदित और महेश ने अपनी राय संगठित व असंगठित समुदाय पर दी। कार्यक्रम में दूसरे वक्ता हर्ष ने आंतरिक शिकायत समिति और स्थानीय शिकायत समिति पर जोर देते हुए कहा की इसके साथ ही स्थानीय शिकायत समिति की स्थापना करनी चाहिए क्योंकि इस समिति के होने से पीड़ित महिलाओं की प्रारंभ स्तर पर जांच भी कि जा सकती है और इन्हें उचित न्याय प्रदान कि जा सकती है। उन्होंने विधिक शिकायत केंद्र, विधि संकाय लखनऊ कि तरफ से सेंट मैरी इंटर कॉलेज के प्राचार्य से अनुरोध किया कि आप अपनी स्कूल में एक आंतरिक शिकायत समिति कि स्थापना कीजिए क्योंकि समाज को इसकी बहुत आवश्यकता है।अगली वक्ता नैना ने अपनी बात सबके सामने प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम के सारांश को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि महिलाओं को यौन उत्पीडन के खिलाफ तुरंत केस दर्ज करनी चाहिए और नियम और कानून के प्रति सचेत रहना चाहिए।

इसके बाद कार्यक्रम के आखिरी पड़ाव विद्यालय के प्रधानाचार्य केविन यरनॉल्ड उकोस्ता ने बताया कि हमें अपने अधिकारों के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि हमारा शरीर एक मंदिर कि तरह होती है, इसलिए हमें अपने शरीर को मंदिर के भातिं ही बनाई रखनी चाहिए इसका मतलब हमें यौन उत्पीड़न के खिलाफ तुरंत कार्यवाही करनी चाहिए और नियम और कानूनों के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

HINDUSTAN TIMES PAGE 4

Lucknow University begins census of vultures and state bird sarus in UP

HT Correspondent

letters@htlive.com

LUCKNOW: The Institute of Wildlife Sciences, Lucknow University (LU) has started a census of the state bird sarus and vultures, an endangered bird species in 75 districts of Uttar Pradesh (UP).

The census would be done in collaboration with department of Environment, Forest and Climate Change, said LU spokesman Durgesh Srivastava.

Sarus (Grus Antigone) is a state bird of UP and is the tallest flying bird found in the wetland and agricultural land in Asia. Similarly, vultures, considered natural scavengers, play a very important role in our bio-system. Population of both these bird species has declined over the years. "Baseline data about the current population status is a key to conservation. Till now lot of surveys have been done in UP but the complete district wise map of sarus and vulture distribution in the state is lacking," officials said. "This census will be completed in three phases till June 16th. The census will be linked to GPS data of the region for both the birds and the data thus collected will be compiled to bring about a detailed sarus and vulture Atlas of UP," LU Spokesman said.

LU STUDENTS TO BE TRAINED FOR JOBS IN TOURISM SECTOR

LUCKNOW: The Lucknow University on Tuesday signed an MoU with Indian Association of Tour Operators (IATO) to train students for opportunities in tourism sector. The MoU was signed by vice-chancellor prof Alok Kumar Rai and Prateek Hira, chairman, Uttar Pradesh and Uttarakhand chapter who represented Indian Association Tour Operators at Institute of Tourism Studies on the varsity campus. **HTC**